



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	1-12-24	2	7-8

वैज्ञानिक तालमेल को बढ़ाते हुए करें अनुसंधान कार्य : कुलपति



कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

जागरण संवाददाता • हिसार :
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूत्रकृमि विभाग एवं अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की ओर से कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व-नमूनाकरण, सर्वेक्षण, निष्कर्षण, पहचान और नेमाटोड रोग निदान विषय पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ हुआ। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में आयोजित लघु प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ बतौर मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने किया।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय का नेमाटोलाजी विभाग नेमाटोड समस्याओं से निपटने के कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विभागों की ओर से किए गए शोध कार्यों से चावल, गेहूं, पाली हाउस (टमाटर, खीरा, शिमला मिर्च) मशरूम, फलों व सब्जियों की फसलों में पादप परजीवी निमेटोड के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास हुआ है। नेमाटोड समस्याओं के बारे में किसानों को जागरूक करने के लिए लगातार नेमाटोड जागरूकता दिवस का आयोजन किया जा रहा है। प्रबंधन परीक्षणों में पोली हाउस को प्राथमिकता दी जा रही है। नेमाटोड समस्याओं

16 राज्यों से प्रतिनिधियों ने लिया भाग

इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न 16 राज्यों से मणिपुर, केरल, बिहार, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, असम, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तराखंड, राजस्थान, अरुणाचल प्रदेश, उत्तरप्रदेश, आंध्र प्रदेश तथा हरियाणा से 23 वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।
डा. एचएस गाड ने सूत्रकृमि के परिस्थितियों को जानकर इसके नियंत्रण के बारे में बताया।

को पहले अनदेखा किया जाता था, जिसके कारण किसानों की बड़े स्तर पर आर्थिक हानि हुई है। नेमाटोड एक मूक लेकिन विनाशकारी कीट है। जलवायु परिवर्तन की समस्या फसल पद्धति में विविधता पौधों की सामग्री का आदान-प्रदान हरियाणा के साथ-साथ देश के विभिन्न हिस्सों में निमेटोड की समस्या को बढ़ा रहा है। इस समस्या से निपटने के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधन और अन्य सुविधाओं की आवश्यकता है। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. रमेश यादव व प्रशिक्षण को-ऑर्डिनेटर डा. गौतम चावला ने पाठ्यक्रम की अनुसंधान में उपयोगिता पर विस्तार से प्रकाश डाला।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब के सवेरी	1. 12. 24	3	1-4

नेमाटोड वैज्ञानिक आपसी तालमेल को बढ़ाते हुए बेहतर ढंग से करें अनुसंधान कार्य : प्रो. काम्बोज

हकृति में नेमाटोड रोग के निदान
पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण शुरू, 23
वैज्ञानिक ले रहे हैं हिस्सा

हिसार, 30 नवंबर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूत्रकृमि विभाग व अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना द्वारा कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व-नमूनाकरण, सर्वेक्षण, निष्कर्षण, पहचान और नेमाटोड रोग निदान विषय पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ हुआ। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में आयोजित लघु प्रशिक्षण कार्यक्रम का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शुभारंभ किया।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने देश के विभिन्न राज्यों में कार्यरत नेमाटोड वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे आपसी तालमेल के साथ बेहतर ढंग से अनुसंधान कार्य करें ताकि कम-समय और कम लागत में अच्छे परिणाम हासिल किए जा सकें। विश्वविद्यालय का नेमाटोलॉजी विभाग नेमाटोड समस्याओं से निपटने के कार्यों में



कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विभागों द्वारा किए गए शोध कार्यों से चावल, गेहूं, पौली हाउस (टमाटर, खीरा, शिमला मिर्च) मशरूम, फलों व सब्जियों की फसलों में पादप परजीवी निमेटोड के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास हुआ है।

विभाग द्वारा नेमाटोड समस्याओं के बारे में किसानों को जागरूक करने के लिए लगातार नेमाटोड जागरूकता दिवस का आयोजन किया जा रहा है। नेमाटोड समस्याओं और इसके प्रबंधन के प्रभाव को

दिखाने के लिए कई नेमाटोड प्रबंधन प्रशिक्षण भी किसानों के खेतों में किए गए हैं। प्रबंधन परीक्षणों में पौली हाउस को प्राथमिकता दी जा रही है।

उन्होंने बताया कि नियमित प्रबंधन के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता नियमित प्रजातियों की पहचान करके और फसलों पर उनके प्रभाव को समझ कर हम एकीकृत प्रबंधन प्रथाओं को अपना सकते हैं जो हानिकारक रसायनों पर निर्भरता को कम करते हैं और पर्यावरण के अनुकूल

विकल्पों को बढ़ावा देते हैं। नेमाटोड समस्याओं को पहले अनदेखा किया जाता था जिसके कारण किसानों की बड़े स्तर पर आर्थिक हानि हुई है। नेमाटोड एक मूक लेकिन विनाशकारी कीट है। जलवायु परिवर्तन की समस्या फसल पद्धति में विविधता पौधों की सामग्री का आदान-प्रदान हरियाणा के साथ-साथ देश के विभिन्न हिस्सों में नेमाटोड की समस्या को बढ़ा रहा है। इस समस्या से निपटने के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधन और अन्य सुविधाओं की आवश्यकता है।

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश यादव ने कार्यक्रम में आए हुए सभी का स्वागत किया। प्रशिक्षण को ऑर्डिनेटर डॉ. गौतम चावला ने पाठ्यक्रम की अनुसंधान में उपयोगिता पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के विभिन्न 16 राज्यों मणिपुर, केरल, बिहार, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, असम, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तराखंड, राजस्थान, अरुणाचल प्रदेश, उत्तरप्रदेश, आंध्रप्रदेश तथा हरियाणा से 23 वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समर उजाला	1.12.24	4	3-6

कार्यक्रम

16 राज्यों के 23 वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं, एचएयू में नेमाटोड रोग के निदान पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

नेमाटोड रोग विशेषज्ञ मिलकर बेहतर अनुसंधान कार्य करें

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूत्रकृमि विभाग व अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना द्वारा कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व-नमूनाकरण, सर्वेक्षण, निष्कर्षण, पहचान और नेमाटोड रोग निदान विषय पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हुआ। इसमें विवि के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बतौर मुख्य अतिथि शुभारंभ किया।

कुलपति प्रो. कांबोज ने देश के विभिन्न राज्यों में कार्यरत नेमाटोड वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे आपसी तालमेल के साथ बेहतर ढंग से अनुसंधान कार्य करें, ताकि कम समय और कम लागत में अच्छे परिणाम हासिल किए जा सकें। उन्होंने काह कि विभागों द्वारा किए



हिसार में कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। संवाद

गए शोध कार्यों से चावल, गेहूं, पॉली हाउस (टमाटर, खीरा, शिमला मिर्च) मशरूम, फलों व सब्जियों की फसलों में पादप परजीवी नेमाटोड के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास हुआ है।

उन्होंने बताया कि नियमित प्रबंधन के

महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता नियमित प्रजातियों की पहचान करके और फसलों पर उनके प्रभाव को समझ कर हम एकीकृत प्रबंधन प्रथाओं को अपना सकते हैं, जो हानिकारक रसायनों पर निर्भरता को कम करते हैं और पर्यावरण

के अनुकूल विकल्पों को बढ़ावा देते हैं। नेमाटोड समस्याओं को पहले अनदेखा किया जाता था, जिसके कारण किसानों की बड़े स्तर पर आर्थिक हानि हुई है।

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश यादव ने कार्यक्रम में आए हुए सभी का स्वागत किया। प्रशिक्षण कोऑर्डिनेटर डॉ. गौतम चावला ने पाठ्यक्रम की अनुसंधान में उपयोगिता पर विस्तार से प्रकाश डाला।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के विभिन्न 16 राज्यों मणिपुर, केरल, बिहार, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, असम, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तराखंड, राजस्थान, अरुणाचल प्रदेश, उत्तरप्रदेश, आंध्र प्रदेश तथा हरियाणा से 23 वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	1-12-24	9	2-6

हकृषि में नेमाटोड रोग के निदान पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण आरंभ

अच्छे तालमेल से कृषि में मिलेंगे बेहतर परिणाम

हरिभूमि न्यूज ► हिंसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूत्रकृमि विभाग व अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना द्वारा कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व-नमूनाकरण, सर्वेक्षण, निष्कर्षण, पहचान और नेमाटोड रोग निदान विषय पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ हुआ। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में आयोजित लघु प्रशिक्षण कार्यक्रम का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने मुख्य अतिथि के तौर पर शुभारंभ किया। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने देश के विभिन्न राज्यों में कार्यरत नेमाटोड वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे आपसी तालमेल के साथ बेहतर



हिंसार। कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज। फोटो: हरिभूमि

हंग से अनुसंधान कार्य करें ताकि कम समय और कम लागत में अच्छे परिणाम हासिल किए जा सकें। विश्वविद्यालय का नेमेटोलॉजी विभाग नेमाटोड समस्याओं से निपटने के कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विभागों द्वारा किए गए शोध कार्यों से चावल, गेहूं, पॉली हाउस (

टमाटर, खीरा, शिमला मिर्च) मशरूम, फलों व सब्जियों की फसलों में पादप परजीवी निमेटोड के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास हुआ है। विभाग द्वारा नेमाटोड समस्याओं के बारे में किसानों को जागरूक करने के लिए लगातार नेमाटोड जागरूकता दिवस का आयोजन किया जा रहा

है। नेमाटोड समस्याओं और इसके प्रबंधन के प्रभाव को दिखाने के लिए कई नेमाटोड प्रबंधन प्रशिक्षण भी किसानों के खेतों में किए गए हैं। प्रबंधन परीक्षणों में पॉली हाउस को प्राथमिकता दी जा रही है। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश यादव ने कार्यक्रम में आए हुए सभी का स्वागत किया।

प्रशिक्षण कोऑर्डिनेटर डॉ. गौ चावला ने पाठ्यक्रम अनुसंधान में उपयोगिता विस्तार से प्रकाश डाला। प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश विभिन्न 16 राज्यों मणिपुर, केरल, बिहार, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, असम, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तराखण्ड, राजस्थान, अरुणाचल प्रदेश, उत्तरप्रदेश, आंध्रप्रदेश, हरियाणा से 23 वैज्ञानिक भाग रहे हैं। डॉ. एचएस गौड ने सूत्रकृमि के परिस्थितियों को जानकर इन नियंत्रण के बारे में बताते सूत्रकृमि विभाग के अध्यक्ष अनिल कुमार ने सभी का धन्य किया और पाठ्यक्रम उपयोगिता पर प्रकाश डाला। संचालन डॉ. चेत्रा भट्ट ने किया



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिन 2 मार 22	1-12-24	4	5

नेमाटोड वैज्ञानिक आपसी तालमेल बढ़ा अनुसंधान करें : प्रो. काम्बोज

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूत्रकृमि विभाग व अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना द्वारा कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व नमूनाकरण, सर्वेक्षण, निष्कर्षण, पहचान और नेमाटोड रोग निदान विषय पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ हुआ। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में आयोजित लघु प्रशिक्षण कार्यक्रम का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शुभारंभ किया। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने देश के विभिन्न राज्यों में कार्यरत नेमाटोड वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे आपसी तालमेल के साथ बेहतर ढंग से अनुसंधान कार्य करें ताकि कम समय और कम लागत में अच्छे परिणाम हासिल किए जा सकें। विश्वविद्यालय का नेमेटोलॉजी विभाग नेमाटोड समस्याओं से निपटने के कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विभागों द्वारा किए गए शोध कार्यों से चावल, गेहूं, पौली हाउस टमाटर, खीरा, शिमला मिर्च मशरूम फलों व सब्जियों की फसलों में बादप पीजीवी निमेटोड के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास हुआ है।

विभाग द्वारा नेमाटोड समस्याओं के बारे में किसानों को जागरूक करने के लिए लगातार नेमाटोड जागरूकता दिवस का आयोजन किया जा रहा है। नेमाटोड समस्याओं और इसके प्रबंधन के प्रभाव को दिखाने के लिए कई नेमाटोड प्रबंधन प्रशिक्षण भी किसानों के खेतों में किए गए हैं। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश यादव ने कार्यक्रम में आए हुए सभी का स्वागत किया। प्रशिक्षण कोऑर्डिनेटर डॉ. गौतम चावला ने पाठ्यक्रम की अनुसंधान में उपयोगिता पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के विभिन्न 16 राज्यों मणिपुर, केरल, बिहार, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, असम, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तराखंड, राजस्थान, अरुणाचल प्रदेश, उत्तरप्रदेश, आंध्र प्रदेश तथा हरियाणा से 23 वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक प्रिबुन	1-12-24	8	7-8

‘वैज्ञानिक तालमेल बढ़ाकर करें अनुसंधान’

हिसार (हप्र) : दौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूत्रकृमि विभाग व अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना द्वारा कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व- नमूनाकरण, सर्वेक्षण, निष्कर्षण, पहचान और नेमाटोड रोग निदान विषय पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ हुआ। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में आयोजित लघु प्रशिक्षण कार्यक्रम का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शुभारंभ किया। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने देश के विभिन्न राज्यों में कार्यरत नेमाटोड वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे आपसी तालमेल के साथ बेहतर ढंग से अनुसंधान कार्य करें। विश्वविद्यालय का नेमाटोलॉजी विभाग नेमाटोड समस्याओं से निपटने के कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	30.11.2024	--	--

नेमाटोड वैज्ञानिक आपसी तालमेल को बढ़ाते हुए बेहतर ढंग से करें अनुसंधान कार्य : प्रो. काम्बोज

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूत्रकृमि विभाग व अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना द्वारा कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व - नमूनाकरण, सर्वेक्षण, निष्कर्षण, पहचान और नेमाटोड रोग निदान विषय पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ हुआ। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में आयोजित लघु प्रशिक्षण कार्यक्रम का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शुभारंभ किया।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने देश के विभिन्न राज्यों में कार्यरत नेमाटोड वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे आपसी तालमेल के साथ बेहतर ढंग से अनुसंधान कार्य करें ताकि कम समय और कम लागत में अच्छे परिणाम हासिल किए जा सकें। विश्वविद्यालय का नेमाटोलॉजी विभाग नेमाटोड समस्याओं से निपटने के कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। विभागों द्वारा किए गए शोध कार्यों से चावल, गेहूं, पॉली हाउस (टमाटर, खीरा, शिमला मिर्च) मशरूम, फलों व सब्जियों की फसलों में पादप परजीवी निमेटोड के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास हुआ है। विभाग द्वारा नेमाटोड समस्याओं के बारे में किसानों को जागरूक करने के लिए लगातार नेमाटोड जागरूकता



दिवस का आयोजन किया जा रहा है। नेमाटोड समस्याओं और इसके प्रबंधन के प्रभाव को दिखाने के लिए कई नेमाटोड प्रबंधन प्रशिक्षण भी किसानों के खेतों में किए गए हैं। प्रबंधन परीक्षणों में पोली हाउस को प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने बताया कि नियमित प्रबंधन के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता नियमित प्रजातियों की पहचान करके और फसलों पर उनके प्रभाव को समझ कर हम एकीकृत प्रबंधन प्रथाओं को अपना सकते हैं जो हानिकारक रसायनों पर निर्भरता को कम करते हैं और पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों को बढ़ावा देते हैं। नेमाटोड समस्याओं को पहले अनदेखा किया जाता था जिसके कारण किसानों की बड़े स्तर पर आर्थिक हानि हुई है। नेमाटोड एक मूक लेकिन विनाशकारी कीट है। जलवायु परिवर्तन की समस्या फसल

पद्धति में विविधता पौधों की सामग्री का आदान-प्रदान हरियाणा के साथ-साथ देश के विभिन्न हिस्सों में नेमाटोड की समस्या को बढ़ा रहा है। इस समस्या से निपटने के लिए प्रशिक्षित मानव संसाधन और अन्य सुविधाओं की आवश्यकता है।

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश यादव ने कार्यक्रम में आए हुए सभी का स्वागत किया। प्रशिक्षण कोऑर्डिनेटर डॉ. गौतम चावला ने पाठ्यक्रम की अनुसंधान में उपयोगिता पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के विभिन्न 16 राज्यों मणिपुर, केरल, बिहार, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, असम, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तराखंड, राजस्थान, अरुणाचल प्रदेश, उत्तरप्रदेश, आंध्रप्रदेश तथा हरियाणा से 23 वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	30.11.2024	--	--

‘नेमाटोड वैज्ञानिक आपसी तालमेल से करें अनुसंधान कार्य’

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय व अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना द्वारा कृषि में सूत्रकृमियों का महत्व-नमूनाकरण, सर्वेक्षण, निष्कर्षण, पहचान और नेमाटोड रोग निदान विषय पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ हुआ। लघु प्रशिक्षण कार्यक्रम का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शुभारंभ किया।

प्रो. काम्बोज ने देश के विभिन्न राज्यों में कार्यरत नेमाटोड वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे आपसी तालमेल के साथ बेहतर ढंग से अनुसंधान कार्य करें ताकि कम



समय और कम लागत में अच्छे परिणाम हासिल किए जा सकें। विभागों द्वारा किए गए शोध कार्यों से चावल, गेहूं, पॉली हाउस (टमाटर, खीरा, शिमला मिर्च) मशरूम, फलों व सब्जियों की फसलों में पादप परजीवी निमेटोड के प्रबंधन के लिए

प्रौद्योगिकियों का विकास हुआ है। नेमाटोड समस्याओं और इसके प्रबंधन के प्रभाव को दिखाने के लिए कई नेमाटोड प्रबंधन प्रशिक्षण भी किसानों के खेतों में किए गए हैं। उन्होंने बताया कि नियमित प्रबंधन के महत्व को कम करके नहीं आंका जा

देश के विभिन्न 16 राज्यों के 23 वैज्ञानिक ले रहे हैं माग प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के विभिन्न 16 राज्यों मणिपुर, केरल, बिहार, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, असम, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तराखंड, राजस्थान, अरुणाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश तथा हरियाणा से 23 वैज्ञानिक माग ले रहे हैं।

सकता नियमित प्रजातियों की पहचान करके और फसलों पर उनके प्रभाव को समझ कर हम एकीकृत प्रबंधन प्रथाओं को अपना सकते हैं जो हानिकारक रसायनों पर निर्भरता को कम करते हैं और पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों को बढ़ावा देते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	1-12-24	3	2-5

हकृवि के कालेज आफ एग्रीकल्चर की टीम ने जीता क्रिकेट का फाइनल मुकाबला

जागरण संवाददाता=हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के इंटर कालेज क्रिकेट प्रतियोगिता में कालेज आफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी और कालेज आफ एग्रीकल्चर के बीच फाइनल मुकाबला खेला गया। इस मुकाबले में पहले बल्लेबाजी करने उतरी कालेज आफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी की टीम ने अपने निर्धारित ओवर में 93 रन ही बना सकी। इसके जवाब में खेलने उतरी कालेज आफ एग्रीकल्चर की टीम ने यह मुकाबला 7 विकेट से जीत लिया। असलम कोमैन आफ द मैच दिया गया। अजय खुराना, विकास चौधरी तथा अमन ने प्रतियोगिता में



मुख्यातिथि डा. पवन कुमार खिलाड़ियों के साथ।

अंपायरिंग की तथा उनकी कुशल अंपायरिंग में एक भी विवादित निर्णय नहीं हुआ जिसे सभी ने सराहा। टूर्नामेंट के आज के मुकाबले में विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. पवन कुमार मुख्यातिथि रहे। उन्होंने खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करते हुए एकजुटता से खेलने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने खिलाड़ियों से आह्वान

किया कि वह खेलों में उच्च प्रदर्शन कर विश्वविद्यालय व देश का नाम रोशन करें। इस अवसर पर छात्र कल्याण निदेशक डा. मदन खीचड़, सह छात्र कल्याण निदेशक (खेल) डा. बलजीत गिरधर, रणधीर ढाका, डा. प्रवेश अंतिल, डा. देवेन्द्र बिठान, निर्मल सिंह, इन्दु चौधरी, जितेन्द्र कक्कड़, मुकेश आदि उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समर उजाला	1-12-24	4	3-5

एचएयू के कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर की टीम ने 7 विकेट से जीता क्रिकेट का फाइनल मुकाबला

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के इंटर कॉलेज क्रिकेट प्रतियोगिता में कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी और कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, हिसार के बीच फाइनल मैच खेला गया।

पहले बल्लेबाजी करने उतरी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी की टीम ने अपने निर्धारित ओवर में 93 रन ही बना सकी। इसके जवाब में खेलने उतरी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, हिसार की टीम ने यह मुकाबला 7 विकेट से जीत लिया। मैच ऑफ द मैच असलम को दिया गया। अजय खुराना, विकास चौधरी और अमन ने प्रतियोगिता में अंपायरिंग की।

टूर्नामेंट में शनिवार को विश्वविद्यालय



हिसार में खिलाड़ियों के साथ मुख्यातिथि डॉ. पवन कुमार। स्रोत : संस्थान

के कुलसचिव डॉ. पवन कुमार मुख्यातिथि रहे। उन्होंने खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करते हुए एकजुटता से खेलने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर छात्र कल्याण निदेशक डॉ. मदन खीचड़, सह छात्र

कल्याण निदेशक (खेल) डॉ. बलजीत गिरधर, रणधीर ढाका, डॉ. प्रवेश अंतिल, डॉ. देवेन्द्र बिहान, निर्मल सिंह, इंदू चौधरी, जितेंद्र कक्कड़, मुकेश ढांडा, रविंद्र खुराना एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	30.11.2024	--	--

हकृवि के कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर की टीम ने जीता क्रिकेट का फाइनल मुकाबला



सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के इंटर कॉलेज क्रिकेट प्रतियोगिता में कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी और कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, हिसार के बीच फाइनल मुकाबला खेला गया।

इस मुकाबले में पहले बल्लेबाजी करने उतरी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी की टीम ने अपने निर्धारित ओवर में 93 रन ही बना सकी। इसके जवाब में खेलने

इस मुकाबले में पहले बल्लेबाजी करने उतरी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी की टीम ने अपने निर्धारित ओवर में 93 रन ही बना सकी। इसके जवाब में खेलने उतरी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, हिसार की टीम ने यह मुकाबला 7 विकेट से जीत लिया।

उतरी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, हिसार की टीम ने यह मुकाबला 7 विकेट से जीत लिया। असलम को मैच ऑफ द मैच दिया गया। अजय खुराना, विकास चौधरी तथा अमन ने प्रतियोगिता में अंपायरिंग की तथा उनकी

कुशल अंपायरिंग में एक भी विवादित निर्णय नहीं हुआ जिसे सभी ने सराहा।

टूर्नामेंट के आज के मुकाबले में विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. पवन कुमार मुख्यातिथि रहे। उन्होंने खिलाड़ियों को प्रोत्साहित

करते हुए एकजुटता से खेलने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने खिलाड़ियों से आह्वान किया कि वह खेलों में उच्च प्रदर्शन कर विश्वविद्यालय व देश का नाम रोशन करें। इस अवसर पर छात्र कल्याण निदेशक डॉ. मदन खीचड़, सह छात्र कल्याण निदेशक (खेल) डॉ. बलजीत गिरधर, रणधीर ढाका, डॉ. प्रवेश अंतिल, डॉ. देवेन्द्र बिठान, निर्मल सिंह, इन्दु चौधरी, जितेन्द्र कक्कड़, मुकेश ढांडा, रविंदर खुराना एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।